

भगत नामदेव – सबद ४६
संडा मरका जाइ पुकारे ॥
रागु भैरउ, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६५

संडा मरका जाइ पुकारे ॥
पड़ै नही हम ही पचि हारे ॥
रामु कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे ॥ १ ॥
राम नामा जपिबो करै ॥
हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥
पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥ २ ॥
दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥
गिरि तर जलु जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥ ३ ॥
काढि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥
पीत पीतांबर तृभवण धणी थंभ माहि हरि भाखै ॥ ४ ॥
हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥
कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता ॥ ५ ॥ ३ ॥ ९ ॥

सार: आत्मचिंतनशील जागरूकता में, मुक्ति किसी दूरस्थ शक्ति से मिलने वाला इनाम नहीं है, बल्कि यह ऐसी आंतरिक अवस्था है जो अपने सबसे गहरे सत्य को पहचानने से पैदा होती है। जब मन अहं, मोह और अलगाव के भ्रम से मुक्त होता है तब वह उस एकत्व के प्रति जागृत होता है जो पूरे अस्तित्व का आधार है। इस जागृत अवस्था में, आज़ादी बाहरी स्रोतों से नहीं मिलती बल्कि स्वयं के भीतर ही खोजी जाती है। यह स्पष्टता, सच्चाई और सामंजस्य की स्वाभाविक अवस्था है जो तब पैदा होती है जब जीवन आंतरिक सत्य के अनुरूप होता है।

संडा मरका जाइ पुकारे ॥

संडा और मरका ने जाकर शिकायत की। भक्त प्रह्लाद के गुरुओं का यह जिक्र उन शक्तियों को दर्शाता है जो आध्यात्मिक मार्ग से भटक जाती हैं और अपनी अपेक्षाएँ पूरी न होने पर रक्षात्मक प्रतिक्रिया देती हैं।

पड़ै नही हम ही पचि हारे ॥

वह हमारे पाठ नहीं पढ़ता, उसे समझाने का प्रयास करते-करते हम थक गए हैं। यह सच्ची अंतरात्मा की ओर संकेत करता है जो केवल बात मानने के लिए अपनी आंतरिक सच्चाई से समझौता करने से इनकार करती है।

रामु कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे ॥ १ ॥

यह सर्वव्यापी सच्चाई की बात करता है, ताल पर ताली बजाता है और इसने बाक़ी सभी छात्रों को भी प्रभावित किया है। यह दर्शाता है कि विचार फैलते हैं, सकारात्मकता स्वयं की और दूसरों की अंतरात्मा को जगा सकती है। (१)

राम नामा जपिबो करै ॥

वह निरंतर उस सर्वव्यापी सच्चाई को व्यक्त करता रहता है। यह उस अडिग जागरूकता की ओर इशारा करता है जो बाहरी परिस्थितियों के ध्यान भटकाने पर भी बनी रहती है।

हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥

अंतरात्मा में, उस सर्वव्यापी शक्ति का ध्यान बनाए रखा जाता है। यह दिखावे के बजाय, जीवंत जागरूकता के रूप में बने एकत्व का प्रतीक है। (१)(विराम)

बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥

सभी शासकों को उसके नियंत्रण में लाया गया और मुख्य रानी ने विनती की। यह दिखाता है कि अहं, किस प्रकार आंतरिक कोमलता पर हावी होकर भय उत्पन्न कर, व्यक्ति को असुरक्षित बना सकता है।

पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥२॥

लेकिन, उसके बेटे प्रह्लाद ने उसकी बात नहीं मानी और उसने कुछ अलग करने का फैसला किया। यह रेखांकित करता है कि सत्यनिष्ठ व्यक्ति बाहरी दबाव के बजाय अपनी आंतरिक सच्चाई को प्राथमिकता देते हैं, फिर चाहे वह दबाव सत्ता, परिवार, समाज या धार्मिक उम्मीदों की तरफ से हो।
(२)

दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥

दुष्टों की सभा ने मिलकर कई हमले करने की योजनाएँ बनाईं। यह उस रक्षात्मक अहं का प्रतीक है जिसे जागृत अंतरात्मा से खतरा महसूस होता है, इसलिए वह विवेकहीन सोच और इरादों का सहारा लेता है।

गिरि तर जलु जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥३॥

उसे डराने के लिए पहाड़ से पानी में, फिर आग में फेंका गया, लेकिन स्वाधीन, सर्वव्यापी जागरूकता ने भ्रम को पलट दिया। यह मन की उस अद्भुत कीमिया की शक्ति को दिखाता है जो बाहरी आघात को पार कर सकती है, जिससे वह मन को नुकसान पहुंचाने में असमर्थ होते हैं। (३)

काढि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥

तलवार निकालकर मृत्यु के समान क्रोधित होकर कहा, बताओ, तुम्हारी रक्षा कौन करता है? यह अहं की डराने की कोशिश को दिखाता है, जब आंतरिक स्थिरता नहीं झुकती तब अहं स्वयं से बड़ी शक्ति का प्रमाण मांगता है।

पीत पीतांबर तृभवण धणी थंभ माहि हरि भाखै ॥४॥

सर्वव्यापी शक्ति, तीनों लोकों के स्वामी, स्तंभ के भीतर से प्रकट होकर बोलते हैं। स्तंभ यहाँ ऐसी आध्यात्मिक रूप से बेजान चेतना का प्रतीक है जो जागरूकता का आधार मिलने पर सत्य को अभिव्यक्त करती है। (४)

हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥

जिस शक्ति ने अपने पंजों से हिरण्यकश्यप का विनाश किया, उसने देवताओं और मनुष्य, दोनों को ही भय-मुक्त और सुरक्षित किया। यह दर्शाता है कि अहं का विनाश तीक्ष्ण विवेक से होता है जिससे आंतरिक चेतना और बाहरी जीवन में सुरक्षा का भाव पुनः स्थापित होता है।

कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता ॥५॥३॥९॥

नामदेव कहते हैं कि वह नरहरि का ध्यान करते हैं, वह परिवर्तनकारी और सर्वव्यापी चेतना जो निर्भयता की अवस्था प्रदान करती है। यह धर्म के मार्ग पर निर्भयता की ओर संकेत करता है जहाँ आत्म-कृपा, भय, अन्याय और विपरीत परिस्थितियों के विरुद्ध, अंतःकरण को सुदृढ़ बनाती है। (५)(३)(९)

तत्त्वः भगत नामदेव, भक्त प्रह्लाद और उनके अहंकारी पिता हिरण्यकश्यप की कहानी सुनाते हैं। वह रूपक के ज़रिए हमारे हावी अहं, जिसे हिरण्यकश्यप के रूप में दिखाया गया है और हमारी जागृत अंतरात्मा, जिसे प्रह्लाद के रूप में दिखाया गया है, के बीच के अंदरूनी संघर्ष को समझाते हैं। वह बताते हैं कि अहं आत्म-ज्ञान को रोकने के लिए हर संभव उपाय करता है। अहं जिस कट्टर और अहंकारी सोच को थोपना चाहता है, उसका विनाश करने के लिए नरहरि, यानी परिवर्तनकारी चेतना प्रकट होती है। यह चेतना हमें हमारे असली स्वरूप से जोड़कर निर्भय अवस्था तक पहुँचाती है और हमें अपनी स्वाभाविक अच्छाई को अपनाने में मदद करती है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com